प्रवासी हिन्दी साहित्य

'प्रवास' शब्द का अर्थ है, विदेश गमन, विदेश यात्रा। अतः किसी दूसरे देश में रहने वाला व्यक्ति प्रवासी है। वॉक्यूबलरी डिक्शनरी में प्रवासी की परिभाषा इस प्रकार दी गई है:-
"A diaspora is a large group of people with a similar heritage or homeland who have since moved out of places all over the world." अर्थात् प्रवासी ऐसे लोगों का बड़ा समूह है जिनकी विरासत या मातृभूमि एक समान है और जो विश्व के अन्य स्थलों में स्थानांतरित हो गए हैं।

A diaspora (from Greek "Scattering dispersion) is a scattered population whose origin lies within a smaller geographic locale. Diaspora can also refer to the movement of the population from its original homeland". अर्थात् डायस्पोरा शब्द ग्रीक शब्द से विकसित हुआ है। जिसका अर्थ होता है- बिखरे हुए लोग जिनका मूल एक भौगोलिक विस्तार में हो। डायस्पोरा ऐसे लोगों के लिए भी प्रयुक्त होता है जो अपनी मातृभूमि से अन्य स्थानों में स्थानांतरित होते हैं।

डॉ. रामदरश मिश्र के अनुसार -"प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।"

मृदुला गर्ग के अनुसार:- "प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने की बजाए उसे हिन्दी की मुख्यधारा में स्थान दिया जाए।" विदेशों में रहने वाले लेखक जब संस्कृति के टकराव के बारे में लिखते हैं, तो लोगों को उच्च श्रेणी के साहित्य से मुखातिब होने का अवसर मिला है।

भारतीय मूल के लोग विश्व के विभिन्न देशों में फैले हुए हैं। विदेशों में रहते हुए भी हिंदी लेखकों ने हिन्दी साहित्य को जन-जन तक पहुँचाया। भारतीय मूल के लोग जो विदेशों में रहते हुए हिंदी के सृजनात्मक लेखन को विकसित कर रहे हैं, ऐसे लेखन कार्य को प्रवासी हिन्दी साहित्य की श्रेणी में रखा जाता है। इन लेखकों ने 'हिंदी' को केन्द्र में रखकर साहित्य सृजन किया, उन्हें 'प्रवासी हिन्दी साहित्यकार' की संज्ञा दी जाती है। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में मिथक, इतिहास, राजनीति और

संस्कृति को जीवंत रखा। प्रवासी हिन्दी साहित्य मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिडाड, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा आदि स्थानों पर लिखे गए। हिन्दी साहित्यकारों में 'उषा राजे' का नाम अग्रणी है। उन्होंने इंग्लैंड को अपनी साहित्यिक कर्मभूमि बनाया। इनके साहित्य में भारत और भारतीय संस्कृति एवं भाषा के प्रति अधिक बल दिया गया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति को विस्तार से चित्रित किया है। आज साहित्य सृजन प्रवासियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य को बढ़ाने और विकसित करने में मॉरिशस की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। यहाँ के निवासियों ने अपनी सांस्कृतिक विरासत के रूप में हिन्दी भाषा एवं साहित्य को स्थापित करने के साथ-साथ उसे विकसित भी किया। मॉरिशस में हिन्दी साहित्य के सृजनात्मक लेखन का कार्य किया जाता है जैसे :- कहानी, उपन्यास, नाटक, लघुकथा, एकांकी, यात्रा वृतांत, कविता आदि विधाओं में लेखन कार्य हो रहा है। कुछ रचनाकार जो हिन्दी साहित्य सृजन से जुड़े हुए हैं — डॉ. हेमराज सुंदर, अभिमन्यु अनंत, रामदेव धुरंधर, राज हीरामन, इन्द्रदेव भोला, सूर्यदेव सीबोरत आदि।

प्रवासी हिन्दी साहित्य ने विश्व में अपनी एक अलग छवि विकसित की है। हालांकि 'प्रवासी' शब्द का अर्थ है, विदेशों में रहनेवाले भारतीय मूल के लोग। अतः प्रवासी हिन्दी साहित्य को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि जो हिन्दी साहित्यिक लेखन भारत से दूर देश में हुआ हो, उसे प्रवासी हिन्दी साहित्य कहा जाता है। आज हिन्दी साहित्य में प्रवासी साहित्य की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके माध्यम से लेखकगण भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं उनके भू-भागों का स्पष्ट चित्रण हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में वर्णन करते हैं। प्रवासी साहित्य हिन्दी साहित्य की एक विधा के रूप में विकसित हो रहा है।

जिस भाषा में व्यक्ति को संस्कार मिलते हैं, प्रायः वह उसी भाषा में साहित्य

सृजन करता है और अपने देश की मिट्टी की खुशबू इसी साहित्य में झलकती है। इस कारण प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों ने अपने लेखन का माध्यम हिन्दी को बनाया, क्योंकि इसी भाषा में अपनी अभिव्यक्ति कर सकते हैं प्रवासी लेखकगण प्रवास के दौरान अपने दुख-दर्द अपनी संवेदनाओं के साथ अपने देश के संस्कारों को अपनी रचनाओं में व्यक्त कर देते हैं। प्रवासी हिन्दी रचनाकार अपने लेखन के माध्यम से देश-विदेश की संस्कृति के बीच समन्वयक का कार्य करते हैं। त्रिनिडाड आदि देशों में हरिशंकर आदेश ने हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। प्रवासी साहित्य भारत के बाहर हिन्दी साहित्य की एक पहचान है प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को वैश्विक रूप प्रदान किया है।

हिन्दी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रचार व प्रसार का सर्वाधिक श्रेय प्रवासी हिन्दी रचनाकारों को जाता है, जिन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के स्तर को बनाए रखते हुए साहित्य सृजन किया साथ ही विदेशियों को इसके प्रति आकर्षित किया। इस संबन्ध में प्रवासी लेखिका उषा राजे सक्सेना लिखती हैं कि "वह लेखक संस्कृतियों को निकट लाकर समन्वयवादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दे सकता है। समन्वय सदा से साहित्य का सर्वोत्कृष्ट गुण रहा है। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व भक्तिकाल के शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने वर्ग में बंटे समाज, सम्प्रदायों और विचारधाराओं को समन्वय करके युग परिवर्तनकारी कार्य किया था। अपनी इसी विशेषता के कारण ही 'रामचरित मानस' एक सार्वकालिक ग्रन्थ बन गया है। आधुनिक युग के महान घुमक्कड़ और विराट व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन ने देश-विदेश के अगम्य स्थलों का न केवल अन्वेषण किया अपितु गंगा और वोल्गा नदियों पर अपनी दार्शनिक दृष्टि से समन्वयकारी विचारधारा को संतुष्ट किया है। आज प्रवासी हिन्दी साहित्य से जुड़ी सबसे बड़ी अपेक्षा समन्वय की है। प्रवासी भारतीयों की मानसिकता के संदर्भ में दुर्गा प्रसाद गुप्त लिखते हैं कि "यह ऐसा

भारतीय मन है जो एक तरफ भारत के आध्यात्मिक अतीत पर मुग्ध होता है, उसके लिए आहें भरता है तो दूसरी तरफ भौतिकता में उलझे उसके गरीब और पिछड़े वर्तमान पर आँसू बहाता है। उसके प्रति विरक्ति भाव से प्रेम प्रदर्शित करता है। यह विभाजित मन उन प्रवासी भारतीयों का है जो न तो सही अर्थों में अपनी धर्म और संस्कृति के प्रतिबद्ध रह पाते हैं और न निर्वैयक्तिक। फिर भी वे दोनों संस्कृतियों के प्रेमी आलोचक हैं।" अनेक उपन्यासों में प्रवासी भारतीयों के दोहरे जीवन को दर्शाया गया है।

भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से भिन्न है। भारतीय भोजन, पोशाक, धार्मिक आचार-विचार, भाषा रीतिरिवाज पाश्चात्य संस्कृति से हटकर एक पृथक पहचान स्थापित करती है। साथ ही प्रवासी हिंदी साहित्य हिन्दी साहित्य की एक कड़ी बन चुका है। इस विषय पर डॉ. कमलकिशोर गोयनका जी ने कहा है :- "अतः हिन्दी के प्रवासी साहित्य की गति और विकास को अब कोई भी विरोधी शक्ति रोक नहीं सकती। वह हिन्दी साहित्य की एक सशक्त धारा बन चुकी है। और उसे हमें हिन्दी साहित्य की प्रमुख धारा में सम्मानपूर्ण स्थान देना होगा।"

प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्थानीय संस्कृति एवं संस्कारों की झलक देखने को मिलती है। प्रवासी साहित्यकारों ने वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्रवासी साहित्यकार अपनी जन्मभूमि एवं अपनी बोली भाषा के प्रति उदार दिखते हैं। सभी ने अपनी भाषा और बोली व संस्कृति से लगाव बनाया हुआ है। इस साहित्य में विदेशी मिट्टी में भी देशी संस्कारों की महक मिलती है। प्रवासी हिन्दी साहित्य अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने के साथ-साथ पाठकों को प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं उस भूभाग के लोगों की स्थिति से भी हमें अवगत कराता है, विदेशों में प्रवासी हिंदी सांस्कृतिक दूत का काम करता है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं सर्वाधिक समृद्ध संस्कृति है। अतः पूरी दुनिया

में भारतीय मूल के लोग अपने साथ-साथ भारतीय संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं।

प्रवासी हिन्दी साहित्य और संस्कृति का अभिन्न संबंध है। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में प्रवासी हिन्दी साहित्य की मुख्य भूमिका रही है। भारतीय हिन्दी साहित्य की मुख्य विधा के रूप में प्रवासी हिन्दी साहित्य विकसित हो रहा है। प्रवासी हिन्दी साहित्य विदेशों में भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के वर्चस्व को समृद्ध कर रहा है। विदेशी संस्कृति में रह रहे हमारे प्रवासी साहित्यकारों के मन में भारतीयता रची बसी है। प्रवासी हिन्दी साहित्य विदेशों में लिखा जा रहा है, लेकिन मूल रूप से यह भारत से जुड़ा हुआ है। प्रवासी हिन्दी साहित्य में विदेशी संस्कृति में अपने अस्तित्व को बचाए रखने की चुनौती है।

डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका के अनुसार — "हिन्दी के प्रवासी साहित्य का रंग-रूप उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिन्दी पाठकों के लिए नई वस्तु है एक नये भावबोध का साहित्य है, एक नयी व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है जो हिन्दी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नये साहित्य संसार से समृद्ध करता है। इस प्रवासी साहित्य की कथिपाद भारत तथा स्वदेश व परदेश के द्वन्द्व पर टिकी है तथा बार-बार हिन्दू जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा इनकी श्रेष्ठता के भाव की अभिव्यक्ति होती है।"

प्रवासी हिन्दी रचनाकार भारतीय होने के कारण वे एक तरफ हिन्दी प्रचार-प्रसार विदेशों में कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से भी वहां के लोगों को परिचित करवा रहे हैं। प्रवासी भारतीय दुनिया में जहां भी गए अपनी बहुरंगी संस्कृति का पुष्प अपने साथ लेकर गए हैं, प्रवासी साहित्यकार सिर्फ हिन्दी भाषा को ही समृद्ध नहीं कर रहे हैं, बल्कि हमारी संस्कृति व परम्पराओं की संवाहिका का उत्तरदायित्व निभा रहे हैं। अतः प्रवासी हिन्दी साहित्य को ही विविधता प्रदान नहीं कर रहे हैं बल्कि हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी हिन्दी रचनाकारों का योगदान महत्वपूर्ण है।